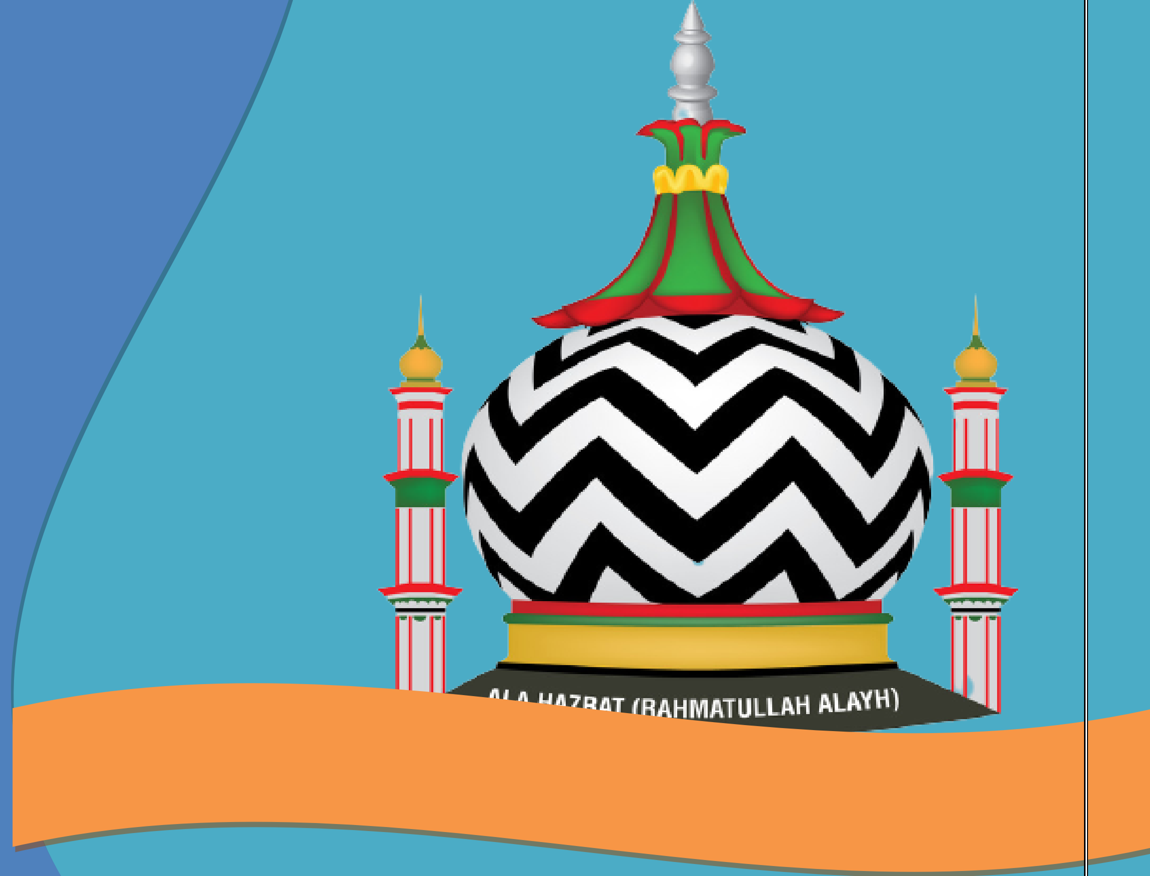
गुस्ताख़ वलदुल हराम



-तस्नीफ़-ए-लतीफ़-

मुफ़स्सिर-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा मौलाना

मुफ़्ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ओवैसी

نور الله مرقده

हिंदी अनुवाद

अब्दे मुस्तफा मुहम्मद शाहरुख रज़ा हशमती क़ादरी

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الصَّلاةُ وَالسَّلامُ عَلَيْك يَا رَسُوْلَ اللهِ

गुस्ताख़ वलदुल हराम

-तस्नीफ़-ए-लतीफ़-

हुज़ूर फ़ैज-ए-मिल्लत मुफ़स्सिर-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत अल्लामा अल हाफ़िज़ अबू सालेह

मुफ़्ती मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ओवैसी

نور الله مرقده

हिंदी अनुवाद

अब्दे मुस्तफा मुहम्मद शाहरुख रज़ा हशमती क़ादरी

मोबाइल न. 7693044656

प्रूफ़ रीडिंग

मुहम्मद तय्यब क़ादरी

نَحْمَدُهُ وَ نُصلِّیْ عَلیٰ رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ

अम्मा बाद दीन-ए-इस्लाम के ख़िलाफ़ हज़ारों फ़ितने उठे और बड़े ज़ोरों पर बेदीनी के तूफ़ान बरपा कर के मिटे और ऐसे मिटे के अब उन का नाम तक दास्तानों में नहीं !

ऐसे ही ता क़यामत तक ऐसे तूफान उठते और मिटते रहेंगे बिलखुसूस जिस के तहत महबूबाने ख़ुदा की बेअदबी व गुस्ताख़ी उन का ओढ़ना बिछोना हो उस का बानी व वलदुज़्जीना या कम अज़ कम वलदुल हराम ज़रूर होगा !

हम ने अपने दौर में नबी-ए-करीम ﷺ सहाबा-ए-किराम, अहल-ए-बैत-ए-इज़ाम और औलिया व सुलहा व ओलमा-ए-अहले सुन्नत के बल्के मां बाप के बेअदब व गुस्ताखों के मुत'अल्लुक तजस्सूस और तहक़ीक़ की तो सौ फ़ीसद तजुर्बा सही निकला !

इस लिए फ़क़ीर साबिका तहरीक़ों के सरबराहों और सरगनों की तारीख़ के साथ क़ुर'आन व हदीस और मसाइल-ए-शरय्या के उसूल से साबित करेगा के गुस्ताख़ "वलदुल हराम" है और यही इस रिसाले का नाम है !

अपने दौर के चंद मशाहीर (मारूफ लोगों) के नाम लिख दूंगा और उन मशाहीर के पेरुकारों से गुज़ारिश करूँगा के अपने दौर के उन मशाहीर के मुत'अल्लुक नुत्फ़ा-ए-हरामी की बात सच्ची है तो यक़ीनन साबिका तहरीक़ों की गुमराही की तरह उन लोगो की गुमराही पर भी यकीन कर के इस कि तहरीक से तौबा कर के क़दीमी मज़हब-ए-हक़ अहले सुन्नत के दायरे में आ जाये, इसी में तुम्हारी और हम सब की निजात है

وَ مَا عَلَیْنَاَ اِلَّا الْبَلٰغ

फ़क़ीर-ए-क़ादरी अबु सालेह मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ओवैसी रज़वी غفرلہ

गुस्ताख़ वलदुज़्जीना ~ क़ुर'आन-ए-पाक का फैसला है के गुस्ताख़ बेअदब वलदुज़्जीना और हराम ज़ादा है चुनांचे नबी-ए-पाक साहिबे लौलाक ﷺ के गुस्ताख़ और बेअदब को वलदुज़्जीना और वलदुल हराम फ़रमाया बल्के उस की मज़म्मत सख़्त से सख़्त कलमात से याद फरमायी, मुलाहिज़ा हो,

وَ لَا تُطِعۡ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِیۡنٍۙ﴿۱۰﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِیۡمٍۙ﴿۱۱﴾ مَّنَّاعٍ لِّلۡخَیۡرِ مُعۡتَدٍ اَثِیۡمٍۙ﴿۱۲﴾عُتُلٍّۭ بَعۡدَ ذٰلِكَ زَنِیۡمٍۙ﴿۱۳﴾اَنۡ كَانَ ذَا مَالٍ وَّ بَنِیۡنَؕ﴿۱۴﴾اِذَا تُتۡلٰی عَلَیۡهِ اٰیٰتُنَا قَالَ اَسَاطِیۡرُ الۡاَوَّلِیۡنَ﴿۱۵﴾سَنَسِمُهٗ عَلَی الۡخُرۡطُوۡمِ﴿۱۶﴾

(पारह 29, सूरह कलम, आयत 10-16)

तर्जुमा ~ और हर ऐसे की बात न सुनना जो बड़ा क़समें खाने वाला ज़लील। बहुत त'आने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला। भलाई से बड़ा रोकने वाला हद से बढ़ने वाला गुनाहगार। दुरुश्त-ख़ू उस सब पर तुर्रा यह कि उसकी अस्ल में ख़ता। उस पर कि कुछ माल और बेटे रखता है। जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जायें कहता है कि अगलों की कहानियाँ हैं। क़रीब है कि हम उसकी सूअर की सी थूथनी पर दाग़ देंगे।

बेअदबी व गुस्ताख़ी क्या थी ? ~ कारईन हैरान होंगे के अल्लाह त'आला ने अपने कलाम क़ुरआन ए मज़ीद में इतने सख़्त और शदीद कलमात क्यूं इस्तेमाल फरमाए, क्या उस (वलीद बिन मुगीरा) ने नबी ए करीम ﷺ को गाली दी थी या ज़ाहिरी नकाइस व उयूब बताए नही हर्गिज़ नही सिर्फ आम रस्म व रिवाज़ के मुताबिक़ हबीबे ख़ुदा सरवर-ए-अंबिया ﷺ को मजनून कहा, बज़ाहिर तो ये इतनी बेअदबी और गुस्ताख़ी किसी को मालुम व महसूस ना होती हो लेकिन नबूवत की शान में अल्लाह त'आला के नज़दीक सख़्त और शदीद

तरीन गुस्ताख़ी है इसी लिए अल्लाह तआला ने इस के दस (10) उयूब वाज़ेह फ़रमाये बिल ख़ुसूस सत्तारुल उयूब रब्बे करीम बे नियाज़ ने बेअदब को वलदुज़्ज़ीना कह कर जो शान-ए-सत्तारी के ख़िलाफ़ था ज़ाहिर फरमा दिया ताकि आने वाले को यकीन हो जाये के हर गुस्ताख़ और बेअदब यक़ीनन वलदुज़्ज़ीना या कम अज़ कम वलदुल हराम ज़रूर होगा चुनांचे नाज़िल शुदा आयत के मौरूद (पूरे उतरने वाले) शख़्स के मुता'अल्लुक पर्दा खोला.....

हरामी की माँ का ऐतराफ़ ~ मरवी है के जब ये आयात नाज़िल हुवी तो वलीद बिन मुगीरा ने अपनी माँ से जा कर कहा के मुहम्मद (ﷺ) ने मेरे हक़ में 10 बातें फरमायी है नौ (9) को तो में जानता हूँ के मुझ में मौजूद हैं लेकिन दसवीं (10v) बात अस्ल में ख़ता होने की इस का हाल मुझे म'आलूम नहीं या तो तू मुझे सच सच बता दे वरना में तेरी गर्दन मार दूंगा इस पर उस की माँ ने कहा तेरा बाप नामर्द था तो मेंने एक चरवाहे को बुला लिया तू उस से है,

तस्दीक़ हो गयी ~ क़ुरआन ए मजीद की तशरीह से साबित हो गया के वाक़ई गुस्ताख़ वलदुल हराम है और (سَنَسِمُهٗ عَلَى الۡخُرۡطُوۡمِ) का मतलब ये है के उस का चेहरा बिगाड़ देंगे और उस की बद बातिनी की अलामत उस के चेहरा पर नमूदार कर देंगे ताकि उस के लिये सबब-ए-आर हो आख़िरत में तो ये सब कुछ होगा ही मगर दुनिया में भी ये खबर पूरी हो कर रही और उस की नाक दूगीली हो गयी कहते हैं के उस की नाक कट गयी....(खाज़िन व मदारिक व जलालैन वग़ैरह)

नाज़रिन ~ हमें तो पूरा यकीन है के हर बेअदब और गुस्ताख़ वलदुल हराम होता है नाज़रिन को भी यकीन होना चाहिए लेकिन चूंके दौरे हाज़िरा में हक़ की आवाज़ को बहुत कम सुना जाता है इसी लिए फ़क़ीर चंद दीग़र क़वी शवाहिद

पेश करता है ताकि शक़ी का शक जाइल (ख़त्म) हो और यक़ीन वालों का ईमान ताज़ा ...

दूसरे वलदुज़्जीना की नबवी ख़बर ~

حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ ، عَنْ الزُّهْرِيِّ ، قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ ، أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ، قَالَ : بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَقْسِمُ قِسْمًا أَتَاهُ ذُو الْخُوَيْصِرَةِ وَهُوَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ ، فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ اعْدِلْ ، فَقَالَ : "وَيْلَكَ وَمَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ قَدْ خِبْتَ وَخَسِرْتَ ، إِنْ لَمْ أَكُنْ أَعْدِلُ " فَقَالَ عُمَرُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ائْذَنْ لِي فِيهِ فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ ، فَقَالَ : " دَعْهُ فَإِنَّ لَهُ أَصْحَابًا يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلَاتَهُ مَعَ صَلَاتِهِمْ وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِمْ يَقْرَءُونَ الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ يُنْظَرُ إِلَى نَصْلِهِ فَلَا يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى رِصَافِهِ فَمَا يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى نَضِيِّهِ وَهُوَ قِدْحُهُ فَلَا يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ ، ثُمَّ يُنْظَرُ إِلَى قُذَذِهِ فَلَا يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ قَدْ سَبَقَ الْفَرْثَ وَالدَّمَ آيَتُهُمْ رَجُلٌ أَسْوَدُ إِحْدَى عَضُدَيْهِ مِثْلُ ثَدْيِ الْمَرْأَةِ أَوْ مِثْلُ الْبَضْعَةِ تَدَرْدَرُ وَيَخْرُجُونَ عَلَى حِينِ فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ " ، قَالَ أَبُو سَعِيدٍ : فَأَشْهَدُ أَنِّي سَمِعْتُ هَذَا الْحَدِيثَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَشْهَدُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ قَاتَلَهُمْ وَأَنَا مَعَهُ فَأَمَرَ بِذَلِكَ الرَّجُلِ فَالْتُمِسَ فَأُتِيَ بِهِ حَتَّى نَظَرْتُ إِلَيْهِ عَلَى نَعْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي نَعَتَهُ .

यानी सैय्यदना अबु सईद ख़ुदरी रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं के एक बार हम लोग रसूलल्लाह ﷺ के पास हाज़िर थे और आप कुछ माल तक़सीम फरमा रहे थे के ज़ुलखुवेसरा आया जो बनी तमीम क़बीले में से था और कहा या रसूलल्लाह अदल कीजिये, हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया तेरी ख़राबी हो जब में ही अदल (इंसाफ) ना करूँ तो फिर कौन करेगा ? और जब मैंने अदल ना किया तो तू महरूम और बद नसीब हो गया, हज़रत उमर रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ हुक्म दीजिये के में इस कि गर्दन मारुं फ़रमाया जाने दो इस के रुफका ऐसे लोग हैं के उनकी नमाज़ों व रोज़ों के मुक़ाबले में तुम लोग अपनी नमाज़ों व रोज़ों को हक़ीर समझोगे, वोह क़ुर'आन पढ़ेंगे लेकिन उनके हलक़ के नीचे ना उतरेगा वो दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर

कमान से निकल जाता है के तीर के पर को देखा जाए लेकिन उस पर कोई निशान नही फिर इसके पैकन (नोक) को देखा जाये और वहां भी कोई निशान नहीं क्यू की वो जानवर के जिस्म से तीर चलाया गया था फिर उस की लकड़ी को देखा जाये तो वहां भी कोई निशान नही, निशानी उनकी ये है के उन में एक सियाह फाम होगा जिस का एक बाज़ू मिस्ल-ए-औरत के पिस्तान के या मिस्ल-ए-गोस्त पाराह (गोस्त के टुकड़े) के हरकत करता होगा वो लोग उस वक़्त निकलेंगे जब लोगों मे तफर्का होगा....
हज़रत अबु सईद रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु कहते हैं कि मैं गवाही देता हूँ इस हदीस को मैंने ख़ुद रसूलल्लाह ﷺ से सुना है और ये भी गवाही देता हूँ के हज़रत अली (كرم الله وجہ الكريم) ने उन लोगों को क़त्ल किया और मैं भी उनके साथ था उन्होंने बाद फ़तह के हुक्म दिया के उस शख़्स को तलाश किया जाये जिस की ख़बर हुज़ूर अकरम ﷺ ने दी थी चुनांचे जब उस की लाश लायी गयी देखा मैंने के जितनी निशानियाँ उस की नबी-ए-करीम ﷺ ने बयान फरमायी सब उस मे मौजूद थी...

ग़ौर फरमाइये के अहमक़ के ज़हन में आया के अदल एक उम्दाह शए है अगर साफ साफ हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ को कह दिया जाये तो क्या मुजायिका है उस बेवक़ूफ़ ने ये ख्याल ना किया के बात तो छोटी है मग़र ब निस्बत शाने नबवी के कितनी बड़ी बेअदबी होगी और अंजाम उस का क्या होगा चुनांचे इसी बेअदबी पर वाजिबुल क़त्ल हो गया था मगर चूंके हुज़ूर अकरम ﷺ को मंजूर था के हज़रत अली (كرم الله وجہ الكريم) के हाथ से अपने तमाम शरीक़ों के मारा जाये इस लिये बावजूद हज़रत उमर रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु की दरख़्वास्त मनाअ फरमा दिया..

नतीजा ज़ाहिर है के इस एक गुस्ताख़ी ने उस शख़्स को कहां पहुँचा दिया और वोह कसरते इबादत और रियाज़त उस के किसी काम ना आयी....

गुस्ताख़-ए-रसूल ﷺ को क़त्ल करने पर ख़ुशी का मंज़र ~ गुस्ताख़-ए-नबूवत कितना ही आला से आला किस्म का ज़ाहिद व आबिद हो हमारे नज़दीक हमारी जूते की नोक बराबर भी नहीं बल्कि हमारे असलाफ़ तो ऐसे बदबख्तों के क़त्ल करने से बहुत ख़ुश होते चुनांचे मुलाहिज़ा हो

عن نبيط بن شريط قال لما فرغ على من قتال أهل النهر قال اقلبوا القتلى فقلبناهم حتى خرج فى آخر هم رجل أسو دعلى كتفہ مثل حلمة الثدى فقال على الله أكبر و الله ما كزبت ولا كزبت كنت مع النبى سلى الله عليہ و سلم و قد قسم فيًا فجا ء هزا فقال يا محمد اعدل فو الله ما عدلت منز اليو م فقال النبى سلى الله اليہ و سلم ثكلتك أمک و من يعدل عليک إذا لم أعدل فقال عمد بن الخطاب يا رسول الله ألا أقتلہ فقال النبى سلى الله عليہ و سلم لا دعہ فإن لہ من يقتلہ فقال سدق الله و رسولہ

(कंजुल अमाल)

यानी नबीत इबने शरीत से मरवी है के जब फ़ारिग हुवे अली अहले नेहरवान के क़त्ल से कहा के लाशों में उस शख़्स को तलाश करो, जब हम ने खूब ढूंढा तो सब के आखिर मे एक शख़्स सिया फाम निकला जिसके शाना पर एक गोस्त पारा (गोस्त का टुकड़ा) मिस्ल सर-ए-पिस्तान के था ये देखते ही हज़रत अली ने कहा (الله اكبر) अल्लाहु अकबर कसम है ख़ुदा की ना मुझे झूटी ख़बर दी गयी ना में उस का मुरतकिब हुवा, एक बार हम हुज़ूर-ए-अकरम ﷺ के साथ थे और हुज़ूर ﷺ ग़नीमत का माल तक़सीम फरमा रहे थे के एक शख़्स आया और कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ) अदल कीजिये के आज आपने अदल नही किया, हुज़ूर अकरम ﷺ ने फरमाया तेरी मां तुझ पर रोये जब में अदल ना करु तो फिर कौन अदल करेगा ? हज़रत उमर रज़ि'अल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह ﷺ

इस को क़त्ल ना करूं ? फ़रमाया नहीं इसको छोड़ दो इसको क़त्ल करने वाला कोई और शख़्स है हज़रत अली ने ये केह कर कहा (صدق الله) अल्लाह त'आला ने सच फ़रमाया यानी नबी करीम ﷺ का फ़रमाया हुवा अल्लाह त'आला का फ़रमान है फलिहाज़ इस में किसी किस्म के शक और शुबह की बात नहीं,

फायदा ~ इस हदीस से ज़ाहिर है के सबसे पहले वही शख़्स क़त्ल किया गया इस लिये के उस की लाश तमाम लाशों के नीचे थी !
नतीजा ज़ाहिर है के इस एक गुस्ताख़ी ने उस शख़्स को कहां पहुँचा दिया और वो कसरते इबादत और रियाज़त उस की किसी काम ना आयी !
इजाला-ए-वहम ~ नेकी और इबादत बहर-ए-हाल अच्छा काम है लेकिन जिस नेकी औए इबादत में नबूवत व रिसालत की तन्कीस (तौहीन) मतलूब हो वो नेकी भी कुफ़्र बन जाती है उस शख़्स का मतलब भी तन्कीस-ए-रिसालत था, चुनांचे मुलाहिज़ा हो

عن أبی برز ة أنہ أتی رسول الله سلی الله علیہ و سلم بدنانیر فجعل یقسمها و عندہ رجلٌ أسود مطمو م السّعر علیہ ثوبان بین عینیہ أثر السّجو د و کان یتعر ض لرسول الله سلی الله علیہ و سلم فلم یعطہ فأتاہ فعر ض لہ من قبل و جهہ فلم یعطہ شیًا فأتاہ من قبل یمینہ فلم یعطہ شیئاً ثم أتاہ من قبل شمالہ فلم یعطہ شیًا ثم أتاہ من خلفہ فلم یعطہ شیًا فقال یا محمّدُ ما عدلت منز الیو فی القسمة فغضب رسول الله سلی الله علیہ و سلم غضبا شدیدا ثم قال و الله لا تجدون أحدا أعدل علیکم منی ثلاث مرات ثم قال یخرج علیکم رجالٌ من قبل المشرق کأن هذا منهم هدیهم هکذا یقرؤون القرآن لا یجاو ز تر اقیهم یمر قون من الدین کما یمرق السهم من الرمیة ثم لا یعو دون إلیہ وو ضع یدہ علی صدرہ سیما هم التحلیق لا یزالون یخرجون حتی یخرج آخرهم مع المسیح الدّ جال فإذا رأیتمو هم فا قتلو هم ثلاثًا شرالخلق و الخلیقة یقو لها ثلاثًا

यानी हज़रत अबी बरज़ाह ने फरमाया के कहीं से दीनार हुज़ूर ﷺ के पास आ गये थे आप ने उस को तक़सीम फरमाना शुरू किया और हुज़ूर ए अकरम ﷺ के पास एक शख़्स सियाह फाम था सर के बाल कतराया हुवा और दोनों आंखों के

बीच में असर सजदाह का नुमायां था चाहता था के हुज़ूर ﷺ कुछ इनायत फरमा दें मगर कुछ ना दिया रूबरू आकर सवाल किया कुछ इनायत ना फ़रमाया दाहिने तरफ से आकर सवाल किया तब भी कुछ ना मिला बाएं तरफ से आकर मांगा कुछ ना मिला पीछे से आकर सवाल किया तब भी कुछ ना पाया, कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ) आज आप ने तक़सीम में अदल ना किया, हुज़ूर अकरम ﷺ इस बात से बहुत ख़फ़ा हुवे और शिद्दत-ए-जलाल से तीन (3) बार फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मुझ से ज्यादा अदल करने वाला तुम किसी को ना पाओगे फिर फ़रमाया ये उन लोगों से है जो तुम पर मशरिक की तरफ़ से निकलेंगे वो क़ुर'आन को पढ़ेंगे लेकिन वो उन के हलकों से नीचे ना उतरेगा वो दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसा तीर शिकार से निकल जाता है फिर ना लौटेंगे दीन की तरफ़ और हाथ मुबारक सीने पर रख कर फ़रमाया निशानी उन की ये है के सर के बाल मुंडवाया करेंगे यहां तक के आख़िर में दज्जाल के साथ होंगे, फिर तीन (3) बार फरमाया के जब तुम उन को देखो तो क़त्ल कर डालो वो लोग तमाम मख़लूक़ात से बदत्तर हैं ये जुमला तीन (3) बार फ़रमाया...

इस हदीस से ज़ाहिर है के वो शख़्स निहायत आबिद था के कसरत-ए-सलात (नमाज़) से पेशानी में उस के घट्टा पड़ गया था गर्ज़ के उन अहादीस में ताअम्मुल (ग़ौर व फ़िक्र) करने के बाद हर शख़्स मालूम कर सकता है के बावजूद कसरत-ए-इबादत और रियाज़त-ए-शाका (मुसलसल इबादत) के वो शख़्स और उस के हम ख़्याल जो वाजिबुल क़त्ल और बदत्तरीन मख़लूक़ात ठहरे वजह इस कि सिवा-ए-बेअदबी और गुस्ताख़-ए-तुबाई के और कोई ना निकलेगी...

इस से साबित हुवा के इबादत कैसी ही आला हो लेकिन अगर अदब ना हो तो वो इबादत ही बेकार है और अगर अदब है तो बड़ी गलती भी मु'आफ़ हो सकती

है क्यूं के यही कलमा तो अंसार ने भी कहा था चुनांचे अकरमा से रिवायत है के माल-ए-ग़नीमत के लिये लश्कर-ए-इस्लाम मे झगड़े होने लगे सदहा सदहा ये ख़बर हुज़ूर ﷺ तक पहुँची आप ने हुक्म दिया के सारा माल-ए-ग़नीमत हाज़िर किया जाये चुनांचे माल-ए-ग़नीमत हुज़ूर ﷺ की बारगाह में हाज़िर कर दिया गया किसी के पास एक दाना ना रहा, उस वक़्त अहले शुज़ाअत और लड़ने वाले समझे के ये माल सिर्फ हम लोगों को मिलेगा मग़र हुज़ूर ﷺ सब बहिस्सा-ए-मसावी देने लगे, सा'अद ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ जिन लोगों ने सफ-ए-कारज़ार में बढ़ बढ़ कर तलवारें चलायी और दाद-ए-शुजाअत दे दे कर अपनी जानें गवाने में ज़रा भी दरेग ना किया क्या आप उन को उन के ज़ईफ़ और आजिज़ लोगो के बराबर देंगे जो क़ाबिल-ए-जंग ना थे....

क़ुर्बान इस ग़रीब नवाज़ी और मिस्कीन परवरी के इरशाद हुवा के तुम लोग ये फ़ख़्र ना करो के हम अपनी क़ुव्वत-ए-बाज़ू से फिरोज़ मंद और जफरयाब हुए है बल्कि येह इन्ही जअफा की दुआ थी, देखिये इस रिवायत में सहाबा ने वही कहा जो मुनाफ़िक़ ने कहा था लेकिन उन्हें कुछ ना कहा गया बल्के उन की दिल जोई फरमायी और अच्छे तास्सुरात ज़ाहिर फरमाये....

गुस्ताख़ और बेअदब वलदुज़्जीना या वलदुल हराम ~ अब हमारा तजुर्बा खुल कर सामने आ गया के बेअदब और गुस्ताख़ वलदुज़्जीना या वलदुल हराम होता है उस की तस्दीक़ क़ुर'आन-ए-मज़ीद से हुवी के अल्लाह त'आला ने एक गुस्ताख़ को वलदुज़्जीना व वलदुल हराम फ़रमाया तो चूंके वो अरबी था ज़बान दान था फौरन माँ के पास पहुँच कर तस्दीक़ करायी तो बात सच निकली, इस से साबित होता है के गुस्ताख़ को खुद भी इस का अहसास होता है लेकिन...?

और हमें तो सोला (16) आने पूरा यकीन होता है क्यूं के हम उसे हरामज़ादाअगर ना माने तो हमारे ईमान में खलल आता है बल्कि ईमानदार के सच्चे ईमान की भी यही अलामत है के वो गुस्ताख़ व बेअदब के वलदुल हराम और वलदुज़्जीना होने का यक़ीन करें चुनांचे सैय्यदुना अली मुर्तज़ा रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने जब गुस्ताख़ और बेअदब को क़त्ल कर डाला तो फिर उस की माँ को बुलवा कर तस्दीक़ चाही के वाक़ई वो मक़तूल हरामज़ादा था चुनांचे हदीस शरीफ में है

गुस्ताख़-ए-नबूवत भी वलदुज़्जीना निकला ~ हज़रत अबु सईद रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते है के उस मक़तूल की लाश हज़रत अली रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु की ख़िदमत में लायी गयी आप ने मजमे से पूछा ("أَيُّكُمْ يَعْرِ فُ هَزَا") तुम में से कौन इसे पहचानता है, ?
एक शख़्स ने अर्ज़ की ("هزا حر قو ص و أ مه ها هنا") इस का नाम हरकुस है इस कि माँ ज़िंदा और यहां मौजूद है इस के बाप का इल्म किसी को नही, हज़रत अली रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु ने उस औरत को बुलवा कर पूछा (ممن هزا) हरकुस का बाप कौन है ?
उस ने अर्ज़ की

(ما أدبر ى إِلَّا أَنَّى كنت فِى الْجَا هِلِيَّة أرعى غنما لى بالزبدة فغثينى ثَىْٔ كَهَئَةِ الظلمَة فَحملت مِنْهُ فَو لدت هَزَا)

यानी मुझे इस के मुत'अल्लुक और कुछ इल्म नहीं, ज़माना-ए-जाहिलियत में मैं ज़बज़ाह पर बकरियां चरा रही थी किसी काली सियाह शकल वाले ने मेरे साथ जिमा'अ कर लिया ये हरकुस उसी का हमल है,
फ़क़ीर ओवैसी غفرلہ ने तजस्सूस किया के जो भी हक़ मज़हब-ए-अहलेसुन्नत को तर्क करे या वैसे बदमज़हबी को इख़्तेयार करता है तो वो ज़ालिम वलदुज़्जीना व वलदुल हराम ज़रूर होता है,

फायदाह ~ ज़ाहिर है के वलदुज़्जीना तो वो है जो अपने बाप का ना हो और वलदुल हराम वो होता है जो हो तो अपने बाप का लेकिन उस के बाप से ये गलती हुवी के जिमा'अ के बाद गुस्ल किये बग़ैर दोबारा जिमा'अ कर लिया, नुत्फ़ा ठहरा तो वो वलदुल हराम है यानी नुत्फ़-ए-नजस की नहूसत से बद'अकाईद होंगे बहुत से आला ख़ानदान के लोग बदमज़हब हो जाते है उस की अक्सर और असल वजह यही होती है...

واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب

हज़रत सैय्यदिना मख्दूम-ए-जहानियां जहाँ गश्त बुख़ारी ओची (قرس سرہ) ने फरमाया

یک شی در خواب دیدم مصطفی
عرض کردم ای حبیب کبریا
سیدان شیعھ اولاد تواند
گفت لا واللہ لا واللہ لا

यानी एक रात में रसूलल्लाह ﷺ की ज़ियारत से मुशरर्फ हुवा और अर्ज़ की के या हबीब-ए-किबरिया ﷺ बताईये शिया सैय्यद आप की औलाद है फ़रमाया ख़ुदा की क़सम वो हर्गिज़ मेरी औलाद नहीं, (कई बार फ़रमाया)

इज़ालाह-ए-वहम ~ फ़क़ीर ने अहले बैत-ए-सादात और मशाइख़ व उलमा की औलाद मे बदमज़हब हो जाने इल्लत (की वजह) लिखी उन की औलाद वलदुलज़्जीना या वलदुल हराम होगी जैसा के मुशाहिदा है के बहुत से अच्छे खानदानी लोग बदमज़हब है और हर बदमज़हब या वलदुलज़्जीना होगा या वलदुल हराम, मुक़द्दस खानदानों के अदब व एहतराम के पेशे नज़र फ़क़ीर ने यूं लिख दिया के वो वलदुलज़्जीना ना होंगे तो वलदुल हराम ज़रूर होंगे जब्कि वालिदैन ने जिमा-ए-औला के बाद गुस्ल यस वज़ू के बग़ैर दोबारा जिमा'अ किया या दौराने हैज़, तो वो नुत्फ़ा वलदुल हराम होगा, ऐसे नुत्फे बदमज़हब, ज़ालिम, चोर, डाकू, जानी, बदमाश, हो सकते है इस पर बाज़ अहले इल्म दोस्त फ़क़ीर पर नाराज़ हुवे के आज कल तो उमूमन ऐसा हो रहा है तो फिर ओवैसी ने सब को वलदुल हराम कह दिया, ओवैसी ग़रीब कौन लगता है के किसी को वलदुल हराम कहे बल्कि फ़क़ीर तो ये अर्ज़ करता है के अहले इस्लाम नेक और मुत्तक़ी बच्चे जनें गफलत और सुस्ती को दूर कर के अपनी नस्ल को नूरी नस्ल बनाइये और ये राए ओवैसी की ज़ाति नही बल्कि रसूलल्लाह ﷺ से इसी तरह साबित है, चुनांचे अबु शैख़ और देलमी ने बयान किया के रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया के

(مَنْ لَمْ يعرِ فْ حَقَّ عِتْرَتِى وَ الْعَرَبِ فَهُوَ لِلِ حْدَىْ ثَلَاثٍ اِمَّا مُنَافِقٌ وَاِمَّا لِزَنْيَةٍ وَاِمَّا امْرُوٌ حَمَلَتْ بِهِ اُمُّهُ فِىْ غَيْرِ طُهْرٍ)

यानी जिस ने मेरी औलाद, अंसार, औए अरब का हक़ ना पहचाना वो या तो मुनाफ़िक़ है या वलदुज़्ज़ीना या ऐसा आदमी है जिसे इस कि माँ ने नापाकी की हालात में (उसे) हमल मे लिया है...

فقط والسلام

मदीने का भिखारी अलफ़क़ीरुल क़ादरी मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ओवैसी रज़वी غفرلہ

फ़ासिकों की इताअत के सबब अज़ाबे इलाही

....

सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ि'अल्लाहु अन्हु के वालिदे गिरामी ताजुल उलमा रासुल फ़ुज़ला हामिये सुन्नत माहिये बिदअत बकियतुस्सलफ़ हुज्जतुल खलफ़ ख़ातिमुल मुहक़्क़ीकीन हुज़ूर अल्लामा शाह मुफ़्ती मुहम्मद नक़ी अली ख़ाँ रज़ि'अल्लाहु त'आला अन्हु अपनी किताब सुरुरुल कुलूब फ़ी ज़िकरुल महबूब में तहरीर फ़रमाते हैं। एक रोज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम किसी शहर में ज़ा निकले, तमाम शहर मुर्दा पाया फ़रमाया यह लोग ग़ज़बे इलाही से मरे हैं कि बे गोरो क़फ़न पड़े हैं। हवारियो ने अर्ज़ किया काश मालूम होता किस सबब से उन पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ। आपने उन्हें पुकारा एक ने जवाब दिया लब्बैका या रूहुल्लाह, फ़रमाया: तुम्हारा क्या हाल हुआ? अर्ज़ किया हम सब रात को आराम से सोए और सुबह दोज़ख़ में दाख़िल हुए कि फ़ासिकों की इताअत करते और दुनिया को दोस्त रखते जैसे लड़का माँ को दोस्त रखता है कि उस के आने से ख़ुश होता है और जाने से रोता है। फ़रमाया: उन में से ओरों ने क्यों न कलाम किया ? अर्ज़ किया आग की लगाम उन के मुंह में दी है। मैं भी उन के साथ था मगर उन में से न था। अब दोज़ख़ के कनारे पर हूँ देखिये बचूँ या न बचूँ।

{सुरुरुल कुलूब शरीफ़, स. 171}

अब्दे मुस्तफा मुहम्मद शाहरुख रज़ा हशमती क़ादरी